"मिथक, फैंटेसी तथा कल्पना"

(Myth)

'मिथक' शब्द अँग्रेजी के 'मिथ' एवं ग्रीक शब्द 'माइथोस' शब्द पर आधारित है। मिथ का प्रयोग 'कल्पित कथा' या 'पौराणिक कथा' के लिए किया जाता है। अरस्तू ने अपने ग्रन्थ 'पोयटिक्स' में मिथक शब्द का प्रयोग 'मनगढ़न्त कथा' के लिए किया है। मिथक परम्परागत अनुश्रुत कथा है जो किसी अतिमानवीय प्राणी या घटना से सम्बन्धित होती है, जो बिना किसी तर्क के स्वीकार कर लिया जाता है।

मिथक की निम्न विशेषताएँ हैं:—

→ यह लोक प्रसिद्ध मनगढ़न्त या पौराणिक कथा होती है।

→ इसमे अतिमानवीय प्राणी या घटना का उल्लेख होता है।

→ इसे बिना तर्क के स्वीकार कर लिया जाता है।

→ इसमें विस्मयपूर्ण एवं कौतूहलपूर्ण घटनाएँ होती हैं।

→ वह अनेक आद्य बिम्बों का गुच्छ होता है।

→ मिथक के क्रियाकलाप और कथा मानवेतर विशेषतः देवताओं से सम्बन्धित होते हैं।

→ वह लोक विश्वास पर आधारित होता है।

→ मिथक बुद्धिमूलक न होकर सहजात वृत्ति संजात होते हैं और वे सामूहिक अवचेतन मन से सम्बद्ध हैं।

मिथक को साहित्य की एक महत्वपूर्ण टैकनीक माना गया है, जिसके माध्यम से अचेतन को प्रकाश में लाया जाता है तथा अनुभूति को प्रत्यक्ष करने में सहायता मिलती है। मिथक के माध्यम से इतिहास से जुड़ने की कलात्मक क्षमता

भी काव्य में आती है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी', धर्मवीर भारती का 'अन्धा युग', नरेश मेहता की 'संशय की एक रात' मिथक पर आधारित ऐसी कृतियां हैं जिनमें आधुनिक भाव बोध को अभिव्यक्त किया गया है। डॉ० एस० एन० गुप्ता के अनुसार, "कविता में मिथकों का प्रयोग सायास नहीं, स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। उन्हें काव्य का अभिन्न अंग होना चाहिए और उन्हें कवि की दृष्टि से जुड़ा होना चाहिए। ये गुण आने पर ही मिथक कलात्मक बन पाएँगे।"

फैंटेसी — इस शब्द का निर्माण यूनानी शब्द 'फैंटेसिया' से हुआ है, जिसका अर्थ है — "मनुष्य की वह क्षमता जो सम्भाव्य संसार की सर्जना करती है।" मानविकी कोश में फैंटेसी को स्वप्न चित्र मूलक साहित्य कहा गया है, जिसमें असम्भाव्य सम्भावनाओं को प्राथमिकता दी जाती है। फैंटेसी कल्पना पर आधारित होती है, जिसे दिवास्वप्नात्मक अथवा दुःस्वप्नात्मक मानसिक बिम्ब कहा जा सकता है। यह एक प्रकार की साहित्यिक तकनीक है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य के स्वप्न और अवचेतन में घटित होने वाली घटनाओं की बिम्बावलियों से है जो विघटित एवं बेतरतीब होती हैं। प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक गजानन माधव मुक्तिबोध के अनुसार, "फैंटेसी में मन की निगूढ़ वृत्तियों का, अनुभूत जीवन समस्याओं का, दलित विश्वासों और इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप होता है।" मुक्तिबोध

की कविताओं — 'ब्रह्मराक्षस, लकड़ी का रावण, अंधेरे में' आदि में फैंटेसी का प्रयोग किया गया है।

फैंटेसी के तीन प्रयोजन माने जाते हैं — (i) मनोरंजन, (ii) यथार्थ से पलायन और दोषयुक्त मानव तथा (iii) दोषयुक्त संसार के प्रति नवीन दृष्टिकोण से विचार करना। देवकीनन्दन खत्री ने अपने तिलस्मी उपन्यासों में जिस फैंटेसी का प्रयोग किया है उसका उद्देश्य मनोरंजन एवं यथार्थ से पलायन है, जबकि मुक्तिबोध की कविताओं में प्रयुक्त फैंटेसी का उद्देश्य मानव एवं संसार के प्रति नवीन दृष्टिकोण है।

कल्पना — काव्य के मूल तत्वों में कल्पना को माना गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "जो वस्तु हमसे अलग है, हमसे दूर प्रतीत होती है उनकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामीप्य का अनुभव करना कल्पना है। साहित्य वाले इसे भावना कहते हैं और आजकल के लोग कल्पना।" शेक्सपियर का मत है कि "उन्मत्त, प्रेमी और कवि इन तीनों का कल्पना से अविरल सम्बन्ध है।" "कल्पना मनुष्य की वह प्राकृतिक मानसिक शक्ति है जो चेतना का ही एक रूप है तथा जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नवीन उद्भावनाएँ, आविष्कार, निर्माण या पुनर्निर्माण करता है।" कल्पना और बुद्धि का समन्वय होने पर वैचारिकता एवं चिन्तन का जन्म होता है तथा कल्पना और भावानुभूतियों का समन्वय होने पर यह भाषा के माध्यम से

साहित्यिक कृतियों को जन्म देती है।

साहित्य में कल्पना तत्व के माध्यम से निम्न कार्य सम्पन्न होते हैं—

→ नाटकों या काव्यों में उत्पाद्य कथानकों को गढ़ने में कल्पना की भूमिका रहती है।

→ धूमिल अतीत की विशृंखलित कड़ियों को कल्पना से जोड़ा जाता है।

→ पात्रों की चरित्र सृष्टि भी कल्पना से होती है।

→ वस्तु वर्णन या व्यक्ति वर्णन में कल्पना की प्रमुख भूमिका है।

→ भाषा शैली को आलंकारिक, व्यंजक, मार्मिक बनाने में कल्पना महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

जर्मन दार्शनिक 'काण्ट' ने कल्पना के तीन भेद माने हैं— (i) पुनर्निर्माण करने वाली कल्पना,
(ii) उद्भावक कल्पना तथा
(iii) सौन्दर्यबोधक कल्पना।